बाबुषा कोहली की पाँच कविताएं

(1)

जान-ना

नीम का पेड़ नहीं जानता कि नीम है उसका नाम

न पीपल के पेड़ को पता कि वह पीपल है

यह तो आदमी है जो जानता है कि उसका नाम

बाँके बिहारीदुबे है और उसके पड़ोसी का

शेख़ रहीम।

आदमी अपने नाम के गौरव के बारे में जानता है।

और भी बहुत कुछ जानता है वह-

नामों की उत्पत्ति और नीति-वचनों के बारे में

इतिहास और न्याय के बारे में

तत्त्व-मीमांसा और वेदांत के बारे में

रामायण, हदीस और क़ुरआन के बारे में

रहीम की दूसरी जोरू और तीसरी संतान के बारे में

पर आदमी यह नहीं जानता कि रहीम के बारे में जानना;

और रहीम को जानना-

दो अलग बातें हैं।

आदमी यह भी नहीं जानता-

कि अतिरिक्त जानना एक तरह की अश्लीलता है।

आदमी केवल पेड़ों के नाम जानता है,
पेड़ों को नहीं।

(2)

जीवन के शिल्प में

कविता,

अपने सौंदर्य के लिए

थोड़ा छद्म संभव कर लेती है-

बिना हिचकिचाहट।

एक सच्चे जीवन की उपमा,

एक सच्चा जीवन ही हो सकता है।

कविता आग का फूल है ; जीवन फूल की आग।

कविता नदियों का कोरस है ; जीवन पानी का

एकल आलाप।

सरल है कविता की कठिन बनावट को अर्जित करना

जीवन की सरल बनावट कठिन है

कोई आता है अब मेरे यहाँ कविता से मिलने

कहती हूँ-

बैठो ! फूल की आँच चखो।

पानी पियो।

कविता के शिल्प की नहीं,

मुझसे जीवन के शिल्प की बात करो।

(3)

शब्दों के स्तूप में अर्थ का नख

छाती से शिशु का शव चिपकाए
बिलख-बिलख गिरती थी
धरती पर बेसुध हो
किसा गौतमी

धरती के धीरज पर धूजती
हाय हाय करती
शोक से लिथड़ाई
बावरी-सी फिरती थी
किसा गौतमी

तब किसी ग्रामीण ने कहा-
तथागत के द्वार जा !

आस का दीपक बाले
गोद में उठाये निष्प्राण देह
आकाश का पता ढूँढ़ने
पृथ्वी पर दौड़ी थी
किसा गौतमी

आँखों पर अश्रुओं का पट था
कुछ भी न दिखता

लाग के सावन की अंधी
हरे-हरे घाव वह उघाड़ती

टूटी टहनी-सी बार-बार गिरती थी

किसा गौतमी

देर तक मौन रहे मारजित

फिर बोले-

पुत्र पुनर्जीवित होगा अवश्य

एक विधि से।

क्षण भर में नाचने लगी

बिना विधि जाने ही

किसा गौतमी

(तब कौतूहल-से भरी किसी बाबुषा ने

शोक को संबोधित किया -

हे शोक !

तू कितना अस्थायी

व उथला है-

विश्व के सबसे व्यथित प्राणी के निकट भी

क्षण भर ही ठहरा है ?

हाय ! मरने को आतुर थी अविलम्ब

किस भ्रम के अधीन हो नाच रही-

किसा गौतमी ?

तब शास्ता ने सातवें शरीर में प्रवेश कर

अबोध बाबुषा की दुविधा का

अंत किया।

लौटे वहीं-

जहाँ सुख की आस में हँसती थी-

किसा गौतमी।)

पुत्र पुनर्जीवित होगा अवश्य

एक विधि से-

जा ! मुट्ठी भर सरसों लेती आ

ऐसे घर से

जहाँ कभी कोई न मरा हो

पुत्र तेरा जागेगा पुनः

किसा गौतमी !

कहते हैं,

पुत्र तो न जागा किंतु उस दिन

प्रथम बार जागी थी

किसा गौतमी

भगवान व्यथाओं के उपवन से बोध के पुष्प चुन गाथाएँ कहते हैं। अबोध बाबुषा की कविता स्तूप भर है, जहाँ उनका नख रखा है। शाक्यमुनि की अनुमति ले बाबुषा ने उनके नख से लिखा-

मृत्यु-

नींद का नीला फूल है

दुनिया भर में पाया जाने वाला-

हर आँगन उगता

ऋतुओं से निरपेक्ष वह

ऐसा प्रतीत होता कि मानो खिला अकस्मात्

देखा ही नहीं कभी बीज को

गड़ा रहा माटी की देह में

श्वास में पड़ा रहा

नींद का वह फूल कहीं भी खिले-
सुदूर या निकट
किसी भी रुत

तीखी सुगन्ध से-

आज भी जाग उठती है

किसा गौतमी

(4)

सब बरोबर है

(ऐ म्हात्रे !

मई तेरे को हिन्दीइच्च में समझाएगी-
सुन न रे !)

**

काफ़्का ने कई कमबख़्त काफ़्का पैदा किये इस धरती पर

सार्त्र ने कई स्वयंभूसार्त्र

(मैदान में कहीं पर भी खड़े होकर

अपने बायीं ओर देख, भाऊ !)

पाश से आती है पाशों की प्रलयंकारी बाढ़

महाप्राण, महादेवी और महाश्वेता की तुलना में

गुलज़ार ने बना डाले सबसे ज़्यादह गुलज़ार

(अच्छा ! तूने कभी महानाम का नाम सुना क्या ?

ओय ! अभी गूगल नई करने का !)

इसी पृथिवीलोक में;

जहाँ एक पत्ता भी दूसरे पत्ते-सा रूप नहीं धरता

अर्वाचीन हो जाती नदी पलक के झपकते ही

किताब के दो पन्नों में बदल जाती सदी

धूप का सार्वभौमिक महाकवि सूर्य

अपनी कलम से कोई दिन दोबारा नहीं लिखता

बरसातें आती हैं, आते हैं वसन्त

कोई ऋतु अपना दोहराव नहीं करती

जाने वाला हर श्वास अंतिम होता है सभी जीवों का

आने वाली वायु नवीन

उसके भी सिर पर तना रहा वह नीला कनात

जिसने सिर उठा कर ऊपर कभी देखा तक नहीं

हर एक को बराबरी से बँटने वाली वस्तुएँ भी

बराबरी से हरेक नहीं मिलती

मिट्टी पर रेंगता सबसे छोटा कीड़ा भी

आकाश की दया से वंचित नहीं-

सबसे बड़ा टुकड़ा घेरते हैं आइन्स्टाइन और हॉकिंग

नील डेग्रासटायसन से तो अभी जनता

ठीक-ठीक वाकिफ़ भी नहीं

एक-से लिबास में जकड़ दिए जाते हज़ारों बच्चे

स्कूलों में हर साल

एक-सी ज़मीन के लिए संघर्ष से इतिहास है लाल

अनुप्रासयुक्त टर्राहट की गूँज से बचते-बचाते

कुआँ फाँद भाग निकला स्वप्नदर्शी

सोता नहीं-

गुले-अशर्फ़ी, अमलतास, अबोली, बबूल

और छुई-मुई के बीज बोता रहता है

इधर के कुछ दशकों में मनस्विदों ने

रिकॉर्ड नम्बर से दर्ज कीं

नयी-नयी व्याधियाँ

जबकि कई तो स्वयं ही ट्राइका या सर्टालाइन की

अँगुली पकड़ रात के तहख़ाने में उतरते थे

**

दुनिया बोरीवली का प्लेटफ़ॉर्म है रे, म्हात्रे

पुल पर चढ़ के देख न -

यहाँ सब बरोबर है।

(5)

मानिनी का प्रणय-गीत

तब काष्ठाघातिनी ने उस कठकरेज साधक से कहा-

देह की दहकती सिगड़ी पर

देह का कच्चा कोयला डालो

मन के रिक्त पात्र में

मन का अजूठा अन्न परोसो

आत्मा की तृषा के लिए

आत्मा के कुएँ से जल खींचो

अधर रख दो कविता की नाभि पर

श्वास की नमी से शुष्क श्वास सींचो

तर्जनी डुबो लो हृदय के सरोवर में

भाल पर जल का तिलक करो

तब मान धरो ज्ञान धरो प्राण धरो

देहरी पर सारा सामान धरो

और भीतर आओ

पृथ्वी की धड़कन पर ध्यान धरो

अपने अस्तित्त्व के चहुँ ओर

कुंडलिनी-सा लपेटो गहनतमा को

जोग की जोत से जोत जला कर

अपने निकट बैठो

कामना का विष चखा है मेघ ने

देखो ! वह नीला पड़ा है

(भादो के टीले से टिका, खड़ा दूर)

और ज्वर से जूझती धरती का मुख

चन्द्रमा के चैत सा

पीला पड़ा है

वेदों से सज्जित सिर रखो वेदी पर

वंदना करो प्रकृति की

देवी का आह्वान करो

वाणी से

वचन से

व्यवहार से

विष के विपन्न को विष के वैभव से काट दो

जो इससे कम कुछ लाए हो

कुमार !

तब जाओ तुम

सब वंचितों में बाँट दो।

(**परिचय :** कवयित्री युवा पीढ़ी की सशक्त हस्ताक्षर हैं। वर्तमान में जबलपुर, म. प्र. में अध्यापन कार्य से संलग्न हैं। ईमेल- baabusha@gmail.com)